पावागढ़ की महाकाली मैना गुजरी

बाबू राम पँवार
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राष्ट्रीय वीर गुर्जर महासभा
मो .नं .8958901114

भारतीय इतिहास की 15वी शताब्दी में भारतीय राज्य और साम्राज्य अरबों तुर्कों और पठानों के आक्रमण के शिकार हो चुके थे। पंजाब और दिल्ली में लोदी वंश का व अन्य उस वंश के सुल्तानों का प्रभुत्व था। उत्तर प्रदेश में शक वंश के सुल्तान प्रबल हो उठे थे। बिहार में लोहानी पठान सिर उठा रहे थे। मालवा में खिलजी वंश का सुल्तान गयासुद्दीन मांडूगढ़ पर राज करता था। गुजरात में महमूद बेघड़ा अपनी राक्षसी भूख के लिए इतिहास में प्रसिद्ध था और साम्राज्य विस्तार का स्वपन देख रहा था । आशा की किरणें राजपूताना ग्वालियर में राणा कुंभा संग्रामसिंह और राजा मानसिंह तोमर की प्रभुत्ता और संगठित होने वाली युद्ध शक्ति पर आधारित होकर फूट रही थी। पठान और तुर्कों की स्वर्ण संचय की भावना, कामना, मारकाट की आकांक्षा, नारियों के अपहरण की वासना, राज्य स्थापना का लोभ और विस्तार की कामना प्रबल अत्याचारों की आंधी चारों ओर फैल रही थी।

गुर्जरों, राजपूतों और क्षत्रियों में जिन पर देश की रक्षा की जिम्मेदारी थी आपसी फूट के शिकार थे और उनके तलवार पकड़ने वाले हाथों की मुठिया जीवन निर्वाह के लिए फलों की मुठ पकड़ रही थी। शब्दों में लिखा जाए तो यह समय कठोर विकराल काल का समय था। शहर और देहात, खेत और संपत्ति विरानी लूटमार के शिकार थे। सभ्यता संस्कृति का विनाश अपहरण की घटनाओं के साथ धार्मिक जीवन मुल्ला मौलवियों के निरंकुश हाथों में समर्पित था। मालवा, गुजरात का सौंदर्य मांडूगढ़ के सुल्तान ग्यासुद्दीन के महलों में 15,000 बेगमों के साथ खिलवाड़ कर रहा

था और नित्य प्रति यह संख्या बढ़ाने की कामुख योजनाएं उभार पर थी। राजस्थान, मालवा और गुजरात के गुर्जरों ने मांडूगढ़ के गुर्जर परिवार की मैना गुर्जरी बाला के रूप में पहुंच लक्ष्य भेद वीरता का सौरभ गाँवों के समीर में मिलकर इन राजमहलों तक पहुंचने में क्या देर लगती थी? मांडूगढ़ का शहजादा मैना को देखने और पाने को व्याकुल हो उठा। गुजराती भाषा के प्रसिद्ध साहित्यिक प्रोफेसर रसिकलाल पारिख अपने नाटक 'मैना गुजरी' में गुर्जरी का उच्च चरित्र शौर्य एवं समाज प्रतिष्ठित वर्णन किया है जो निम्न प्रकार है-

मैना की शादी चंदा नाम के एक युवक से राजस्थान गुजरात की सरहद के गांव में हो जाती है। उसकी ससुराल वाले उसे लेने के लिए आते हैं। सुरक्षा की व्यवस्था भी रास्ते के लिए हो जाती है। उसका देवर भी गांव की होली में मस्त है।

इसी बीच एक अप्रत्याशित घटना घटती है। गांव से कुछ दूर एक बहुत बड़ा लश्कर बड़ी शान शौकत के साथ पड़ाव डाले आ रहा है और उसके स्वागत को मांडूगढ़ का शहजादा रंगरेलियों के साथ लश्कर लेकर स्वागत में पहुंचकर लश्कर की शोभा में चार चांद लगा देता है। देवली और मांडू का मिलन आनंद प्रसन्नता भरे ग्रामीण जीवन की सरलता को भंग करता हुआ एक अप्रत्याशित के रूप में बदल देता है। गांव की युवतियों में गुर्जर बालाओं में इस प्रकार के समाचार के साथ चिंता, संकोच और एक प्रकार का कौतुहल पैदा होता है। एक नटनी उस उत्सुकता को और भी जगा देती है। उसका शायद विश्वास है कि उसे मैना के यहां पहुंचा देने पर जरूर शहजादा मनमाना पुरस्कार देगा। भोली गुर्जरियाँ मैना के नेतृत्व में सहज विश्वास रखती हैं और अपने को सुरक्षित समझती हैं। कौतूहल वश वह सखियों को लेकर डेरे की ओर उसकी सजावट देखने को चल देती है। इसी बीच में उसे अपना विष बुझा तीर याद आता है । वह खतरे से बचने के लिए आत्मरक्षा के साधन तीर को लेने वापस खेमे के पास लौटरी है, सहेली आगे बढ़ जाती हैं। नटनी शहजादे को

इशारा करके सुनसान निस्तब्ध बीहड़ में उसे उड़ाने का साथियों के साथ प्रयत्न करती हुई खेमे में डाल देती है।

सखियाँ पीछे मैना को ना देखकर आशंकित हो उठती है। नटनी से मारधाड करती हैं सब बातों का पता लेकर गांव पहुंच जाती हैं। मैना को भाइयों, ससुराल से आए हुए वीर गुर्जरों ने भयंकर मारकाट और खून खराबे के बाद शहजादे की सेना को परास्त कर उसके पंजों से मैना को छुड़ा लिया। उसके ससुराल वाले उसे ले जाने से मना कर देते हैं । वह अपनी कुलदेवी महाकाली से मनौती करती है और देवी उसके निर्दोष की साक्षी होकर उसमें प्रकट हो जाती है और मैना वहां से चल देती है और पावागढ़ में तपस्या साधना में अपने को अर्पण करती है। उसको पावागढ़ महाकाली माना जाता है और आज भी उसकी समाधि पर उसकी पूजा होती है। यह पावागढ़ गुजरात में बड़ौदा से 15 किलोमीटर दूर पंचमहल जिले में प्राकृतिक सौंदर्य के बीच विद्यमान है, जहां आने जाने के लिए पक्के सड़क मार्ग बने हुए हैं। प्रतिदिन अनेक बच्चे वह अन्य कई प्रकार के वाहन यहां आने जाने से देशभर से आने वाले यात्रियों, पर्यटकों, दर्शकों, इतिहासकारों, पुरातत्व वेत्ताओं आदि को किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। गुजरात, मालवा, राजस्थान में अनेक लोकगीत, लोक-गाथा तथा उसके पवाडे गाए जाते हैं। अनेक स्थानों पर उसकी पूजा होती है।

****